The Hindu Plus Summary : 29.01.2024

मेन्स मास्टर

अफ्रीका के साथ चीन के संबंधों का विश्लेषण

संदर्भ: अफ्रीका, अप्रयुक्त क्षमता और प्राकृतिक संसाधनों से समृद्ध महाद्वीप, तेजी से चीन का ध्यान आकर्षित कर रहा है। हाल के वर्षों में, अफ्रीका में चीन की रुचि बढ़ी है, जो वैश्विक गतिशीलता में एक महत्वपूर्ण बदलाव का प्रतीक है। विश्व मंच पर अफ्रीका का बढ़ता महत्व चीन के बढ़ते प्रभाव से रेखांकित होता है। ऐतिहासिक संदर्भ में गहराई से जाने, चीन के रणनीतिक लक्ष्यों की जांच करने और अफ्रीका के बढ़ते प्रभाव को पहचानने से, हमें इस बात की बहुमूल्य जानकारी मिलती है कि यह विकसित होती साझेदारी आने वाले वर्षों में वैश्विक व्यवस्था को कैसे नया आकार दे सकती है।

पृष्ठभूमि:

- चीन-अफ्रीकी संबंध 1950 के दशक से चले आ रहे हैं, जब चीन स्वतंत्रता आंदोलनों का समर्थन करता था और बाद में अफ्रीकी समर्थन के माध्यम से अपनी संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद की सीट हासिल करता था।
- 1990 के दशक से, चीन की "बाहर जाओ नीति" ने अफ्रीका में निवेश को प्रोत्साहित किया, जिसकी परिणति 2000 में चीन-अफ्रीका सहयोग मंच (एफओसीएसी) की स्थापना के रूप में हुई।
- आज, चीन अफ्रीका के सबसे बड़े व्यापारिक भागीदार, निवेशक और विकास सहायता के स्रोत के रूप में खड़ा है।

बढ़ता चीनी प्रभाव:

- **महत्वपूर्ण संसाधनों को सुरक्षित करना:** अफ्रीका महत्वपूर्ण खनिजों और दुर्लभ पृथ्वी की आपूर्ति करता है जो चीन के संपन्न तकनीकी उद्योग को ईंधन देता है।
- **वैश्विक कद बढ़ाना:** चीन संयुक्त राष्ट्र में अफ्रीकी समर्थन का लाभ उठाता है और अपनी अंतरराष्ट्रीय उपस्थिति को मजबूत करता है।
- **अपनी मुद्रा को बढ़ावा देना**: चीन "पांडा बांड" और ऋण पुनर्गठन पहल के माध्यम से युआन में अफ्रीकी व्यापार को प्रोत्साहित करता है।
- **बाज़ार तक पहुंच का विस्तार:** अफ्रीका चीनी निर्यात के लिए एक बढ़ता बाज़ार और आसानी से उपलब्ध कार्यबल तक पहुंच प्रदान करता है।

चीनी कूटनीति की चुनौतियाँ:

- **ऋण जाल के बारे में चिंताएँ:** कुछ अफ्रीकी देश चीनी ऋणों से उत्पन्न होने वाले अस्थिर ऋण बोझ से जूझ रहे हैं।
- **अहस्तक्षेप नीति जांच के दायरे में:** आलोचकों का तर्क है कि यह दृष्टिकोण सत्तावादी शासन को सक्षम बनाता है और लोकतांत्रिक सिद्धांतों को कमजोर करता है।
- **संसाधन निष्कर्षण का पर्यावरणीय प्रभाव:** संसाधन निष्कर्षण गतिविधियों के कारण पर्यावरणीय क्षरण के संबंध में चिंताएँ उठाई गई हैं।
- **अनैतिक श्रम प्रथाएँ:** चीनी स्वामित्व वाले उद्यमों में अफ्रीकी श्रमिकों के शोषण की रिपोर्टें सामने आई हैं।

भारत के लिए सबक:

- **रणनीतिक साझेदारी का निर्माण:** भारत विकास सहायता और पारस्परिक रूप से लाभप्रद व्यापार समझौतों के माध्यम से अफ्रीकी देशों के साथ अपने संबंधों को गहरा कर सकता है।
- **बुनियादी ढांचे में निवेश:** पूरे अफ्रीका में महत्वपूर्ण बुनियादी ढांचा परियोजनाओं में निवेश से कनेक्टिविटी और विकास की जरूरतों को पूरा किया जा सकता है।
- **दक्षिण-दक्षिण सहयोग को बढ़ावा देना:** विकासशील देशों के बीच ज्ञान साझाकरण और प्रौद्योगिकी हस्तांतरण को बढ़ावा देना सहयोग और विकास को बढ़ावा दे सकता है।
- **नरम शक्ति को बढ़ाना:** सांस्कृतिक संबंधों और लोगों से लोगों के बीच आदान-प्रदान को मजबूत करने से अफ्रीका में विश्वास और प्रभाव बनाने में मदद मिल सकती है।

निष्कर्ष:

अफ्रीका में चीन का बढ़ता प्रभाव अवसर और चुनौतियाँ दोनों प्रस्तुत करता है। चीन की सफलताओं और कमियों दोनों से सीखकर, भारत अफ्रीकी देशों के साथ रचनात्मक और पारस्परिक रूप से लाभकारी साझेदारी बनाने की दिशा में अपना रास्ता बना सकता है।

म्यांमार के असंतोष पर एक नज़दीकी नज़र

तख्तापलट के तीन साल बाद:

- **असंतोष उबल रहा है:** फरवरी 2021 के तख्तापलट ने आंग सान सू की की लोकतांत्रिक रूप से चुनी गई सरकार को हटा दिया, जिससे बड़े पैमाने पर नागरिक अवज्ञा भड़क उठी। यह प्रतिरोध जारी है, जो सैन्य जुंटा की क्रूर कार्रवाई और वादा किए गए चुनावों की दिशा में प्रगति की कमी के प्रति गुस्से से प्रेरित है।
- **सशस्त्र अवज्ञा फैलती है**: अपदस्थ सांसदों ने राष्ट्रीय एकता सरकार (एनयूजी) का गठन किया, जिसने सेना के खिलाफ लड़ने के लिए पीपुल्स डिफेंस फोर्सेज (पीडीएफ) की स्थापना की। मौजूदा जातीय सशस्त्र संगठनों के साथ, इन पीडीएफ ने विभिन्न क्षेत्रों में महत्वपूर्ण लाभ कमाया है, विशेष रूप से सीमावर्ती क्षेत्रों में बड़े पैमाने पर नियंत्रण किया है।
- **सैन्य नियंत्रण हासिल करने के लिए संघर्ष कर रहा है**: नागरिकों के खिलाफ भारी हथियार और रणनीति तैनात करने के बावजूद, जुंटा को क्षेत्र पर कब्जा करने के लिए भयंकर प्रतिरोध और संघर्ष का सामना करना पड़ रहा है। विशेषकर बहुसंख्यक बमार समुदाय से सैनिकों को भर्ती करने की उनकी क्षमता कम हो रही है, जिससे पलायन और मनोबल गिर रहा है।

चीन की रणनीति:

- **सार्वजनिक ढाल:** अंतर्राष्ट्रीय मंच पर, चीन सक्रिय रूप से जुंटा का समर्थन करता है, इसे निंदा और प्रतिबंधों से बचाता है। यह स्थिरता और म्यांमार के संसाधनों तक पहुंच बनाए रखने के चीन के व्यापक हितों के अनुरूप है।
- **मंच के पीछे सौदे:** हालाँकि, चीन कई जातीय सशस्त्र समूहों के साथ भी घनिष्ठ संबंध बनाए रखता है, खासकर उत्तर में। शान राज्य में इन समूहों और जुंटा के बीच हालिया युद्धविराम कथित तौर पर बीजिंग द्वारा आयोजित किया गया था, जो पर्दे के पीछे प्रभाव पैदा करने की उसकी क्षमता को दर्शाता है।
- **अनिश्चित संघर्ष विराम:** इस युद्धविराम की दीर्घकालिक स्थिरता अनिश्चित बनी हुई है। न तो जातीय समूह और न ही जुंटा एक-दूसरे पर पूरी तरह भरोसा करते हैं, और उनके संचालन पर बीजिंग का प्रभाव विवाद का मुद्दा बन सकता है।

आसियान की सीमित भूमिका:

• **रुकी हुई आम सहमति:** क्षेत्रीय संगठन आसियान ने बातचीत और तनाव कम करने के लिए पांच सूत्री सर्वसम्मति को अपनाया, लेकिन उनके प्रयासों में बाधा उत्पन्न हुई है। जुंटा पूरी तरह से अनुपालन करने से इंकार कर देता है, और उनके दूत को सभी संबंधित हितधारकों के साथ जुड़ने में कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है।

• **बदलती आवाज़ें:** पारंपरिक रूप से सदस्य देशों की आलोचना करने में झिझकने के बावजूद, कुछ आसियान देश तख्तापलट और जुंटा के मानवाधिकारों के हनन की निंदा करने में अधिक मुखर हो रहे हैं। यह क्षेत्रीय गतिशीलता में एक महत्वपूर्ण बदलाव का प्रतीक है।

थाईलैंड का दृष्टिकोण:

• **संतुलनकारी कार्य**: थाईलैंड, म्यांमार से अपनी निकटता और व्यापारिक संबंधों के कारण, अधिक सूक्ष्म दृष्टिकोण अपनाता है। वे आंग सान सू की सहित जुंटा और म्यांमार के निर्वासित संगठनों दोनों के साथ संचार बनाए रखते हैं।

• **मानवीय प्रयास:** बढ़ते मानवीय संकट को पहचानते हुए, थाईलैंड ने म्यांमार के भीतर विस्थापित समुदायों और थाईलैंड में शरण लेने वाले लोगों के लिए अपनी सहायता बढ़ा दी है।

भारत के विकल्प:

• **सक्रिय करुणा:** संकट के कारण होने वाली पीड़ा को कम करने के लिए, भारत म्यांमार के अंदर विस्थापित समुदायों को पर्याप्त मानवीय सहायता प्रदान करने पर विचार कर सकता है। इससे भारत में शरणार्थियों के प्रवाह को प्रबंधित करने में भी मदद मिलेगी।

• **जटिलता को अपनाना**: म्यांमार के साथ भारत के लंबे समय से चले आ रहे संबंधों के कारण उभरती स्थिति के मद्देनजर इसकी नीति का पुनर्मूल्यांकन आवश्यक हो गया है। तीन महत्वपूर्ण वास्तविकताओं को पहचानना - लगातार असंतोष, लचीला प्रतिरोध, और कई शक्ति खिलाड़ियों के साथ खंडित राजनीतिक परिदृश्य - इस जटिल वातावरण से निपटने के लिए महत्वपूर्ण है।

• **सभी पक्षों के साथ जुड़ना**: केवल जुंटा पर ध्यान केंद्रित करने के बजाय, भारत एनयूजी, जातीय सशस्त्र समूहों और नागरिक समाज संगठनों सहित अन्य हितधारकों के साथ व्यापक संबंध स्थापित कर सकता है। इससे स्थिति की अधिक व्यापक समझ बनेगी और बातचीत एवं शांतिपूर्ण समाधान के संभावित रास्ते खुलेंगे।

राज्य की 'गारंटी' पर आरबीआई के दिशानिर्देश क्या हैं?

गारंटी की व्याख्या:

कल्पना कीजिए कि एक राज्य किसी कंपनी द्वारा लिए गए ऋण के लिए गारंटर की तरह काम कर रहा है। यदि कंपनी ऋण नहीं चुका पाती है, तो राज्य हस्तक्षेप करता है और सुनिश्चित करता है कि ऋणदाता को उनका पैसा वापस मिल जाए। इस "सुरक्षा जाल" को गारंटी कहा जाता है और यह निवेशकों को उधारकर्ता की चूक से बचाता है। सरकारें अक्सर राज्य के स्वामित्व वाले व्यवसायों, स्थानीय निकायों या सहकारी समितियों के लिए ऐसा करती हैं। बदले में, ये संस्थाएँ इस गारंटी के लिए सरकार को शुल्क का भुगतान करती हैं।

आरबीआई की सिफारिशें:

• **व्यापक नेट:** "गारंटी" की परिभाषा का विस्तार किसी भी समझौते को शामिल करने के लिए किया जाएगा जहां राज्य भविष्य में किसी और के ऋण का भुगतान करने का वादा करता है, भले ही इसे कुछ अलग कहा जाए। यह सुनिश्चित करता है कि सभी संभावित जोखिमों को पकड़ लिया गया है।

• **जिम्मेदारी से गारंटी देना:** गारंटी का उपयोग केवल राज्य के स्वयं के बजट को उधार लिए गए धन से बदलने के लिए नहीं किया जाना चाहिए। उन्हें राज्य के लिए छिपी हुई देनदारियां नहीं बनानी चाहिए या मूल ऋण राशि और नियमित ब्याज से आगे नहीं बढ़ना चाहिए। मूल रूप से, गारंटियों का उपयोग सावधानी से किया जाना चाहिए न कि जादुई धन निर्धारण के रूप में।

• **कोई निःशुल्क पास नहीं**: फैंसी विदेशी ऋणों, अत्यधिक जोखिम भरे उद्यमों या निजी कंपनियों के लिए गारंटी नहीं दी जाएगी। वे राज्य के नियंत्रण के भीतर जिम्मेदार परियोजनाओं का समर्थन करने के लिए हैं।

• **जोखिमों का आकलन:** गारंटी सभी के लिए एक जैसी नहीं होती। सरकार गारंटी देने से पहले उधारकर्ता के डिफॉल्ट करने की संभावना का आकलन करेगी, जैसे अच्छे ट्रैक रिकॉर्ड वाली कंपनियों को उच्च सुरक्षा जाल देना।

• **सीमा लगाना:** गारंटियों के अतिभार से बचने के लिए, सरकार एक सीमा निर्धारित कर सकती है कि वे एक वर्ष में कितनी गारंटी दे सकते हैं। इससे संभावित वित्तीय बोझ को प्रबंधित करने में मदद मिलती है।

• **पारदर्शिता के मामले:** बैंकों और अन्य ऋणदाताओं को स्पष्ट रूप से खुलासा करना होगा कि वे राज्य की गारंटी के आधार पर ऋण कब दे रहे हैं। इससे हर किसी को इसमें शामिल संभावित जोखिमों को समझने में मदद मिलती है।

• **ट्रैक रखना:** एक केंद्रीय डेटाबेस सरकार द्वारा जारी की गई सभी गारंटियों को ट्रैक करेगा। यह सुनिश्चित करता है कि हर किसी की सटीक जानकारी तक पहुंच हो और किसी भी संदिग्ध लेनदेन को रोका जा सके।

कुल मिलाकर, इन सिफारिशों का उद्देश्य राज्य की गारंटी को अधिक जिम्मेदार, पारदर्शी और इसमें शामिल सभी लोगों के लिए कम जोखिम भरा बनाना है।

बीएसएफ की शक्तियों को लेकर पंजाब कोर्ट में क्यों है?

मुद्दा:

• 2021 में, केंद्र सरकार ने पंजाब, पश्चिम बंगाल और असम में अंतरराष्ट्रीय सीमा के अंदर सीमा सुरक्षा बल (बीएसएफ) के अधिकार क्षेत्र को 15 किमी से बढ़ाकर 50 किमी तक कर दिया।

• पंजाब ने इस पर आपत्ति जताते हुए दावा किया कि यह उसकी राज्य शक्तियों का अतिक्रमण है क्योंकि कानून और व्यवस्था राज्य के दायरे में आती है।

पंजाब के तर्क:

• अधिसूचना असंवैधानिक है और भारत के संघीय ढांचे का उल्लंघन करती है।

• बीएसएफ के अधिकार क्षेत्र को 50 किमी तक बढ़ाने से पंजाब के 80% प्रमुख सीमावर्ती शहर शामिल हो जाएंगे, जो राजस्थान में कम आबादी वाले रेगिस्तान या गुजरात में बंजर भूमि के विपरीत घनी आबादी वाले क्षेत्रों को प्रभावित करेगा।

• यह विस्तार दैनिक जीवन में बाधा डालता है, विशेषकर सीमा के पास भूमि पर खेती करने वाले किसानों के लिए।

न्यायालय की चिंताएँ:

• क्या अधिसूचना बीएसएफ अधिनियम की "स्थानीय सीमा" परिभाषा से अधिक है।

• क्या "स्थानीय सीमाओं" के संबंध में सभी सीमावर्ती राज्यों के साथ एक जैसा व्यवहार किया जाना चाहिए।

• क्या अधिसूचना कानून और व्यवस्था पर पंजाब की विधायी शक्तियों का उल्लंघन करती है।

पंजाब की अपील:

• केंद्र ने राज्य से परामर्श किए बिना मनमाने ढंग से और एकतरफा कार्रवाई की।

• यह राज्य पुलिस और पंजाब के लोगों का अपमान है।

• अधिसूचना वापस ली जाए।

अगले कदम:

• सुप्रीम कोर्ट अप्रैल में मामले की सुनवाई करेगा, दोनों पक्षों के तर्कों का विश्लेषण करेगा और संभावित रूप से सीमावर्ती राज्यों में बीएसएफ क्षेत्राधिकार के लिए एक मिसाल कायम करेगा।

संक्षेप में, यह विवाद राष्ट्रीय सुरक्षा चिंताओं और राज्य की स्वायत्तता के बीच टकराव तक सीमित है, जहां पंजाब अपने स्थानीय प्राधिकरण की रक्षा करना चाहता है जबकि केंद्र सीमा सुरक्षा पर जोर देता है।

प्रीलिम्स बूस्टर

गिलगित-बाल्टिस्तान पर क्या है लद्दाख की मांग?

📦 लद्दाख की लेह एपेक्स बॉडी (एलएबी) और कारगिल डेमोक्रेटिक एलायंस (केडीए) ने गृह मंत्रालय को एक ज्ञापन सौंपा, जिसमें लद्दाख के क्षेत्रीय नियंत्रण को पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर में गिलगित-बाल्टिस्तान तक बढ़ाने सहित मांगें शामिल हैं।

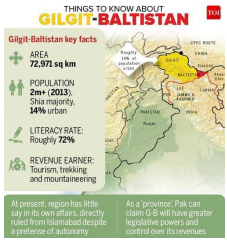

🏞️ लद्दाख अपनी विधानसभा के बिना एक केंद्र शासित प्रदेश में परिवर्तित हो गया, जिससे छठी अनुसूची और अनुच्छेद 371 के तहत राज्य का दर्जा और विशेष दर्जा बहाल करने की मांग को लेकर विरोध प्रदर्शन शुरू हो गया।

🪵 मांगों में विशेष भर्ती अधिकार, लद्दाख के गिलगित-बाल्टिस्तान को शामिल करने का ऐतिहासिक संदर्भ और क्षेत्रीय स्थिरता और विदेश नीति के उद्देश्यों के लिए स्थानीय लोगों को सशक्त बनाने पर जोर शामिल है।

🤝 केंद्र की प्रतिक्रिया में समिति का गठन शामिल है, जिसका ठोस समाधान अभी भी अस्पष्ट है, और 2024 में एक लिखित ज्ञापन के बाद संरचित वार्ता की उम्मीद है।

एंड-टू-एंड एन्क्रिप्शन क्या है और यह जानकारी को कैसे सुरक्षित करता है?

🔒 एन्क्रिप्शन में विशिष्ट नियमों का उपयोग करके पठनीय जानकारी को अपठनीय रूप में परिवर्तित करना शामिल है। यह डेटा एन्क्रिप्शन स्टैंडर्ड (डीईएस) या एडवांस्ड एन्क्रिप्शन स्टैंडर्ड (एईएस) जैसे विभिन्न प्रोटोकॉल का उपयोग करता है और डेटा को लॉक और अनलॉक करने के लिए कुंजियों का उपयोग करता है।

🔑 एंड-टू-एंड (E2E) एन्क्रिप्शन ट्रांसमिशन के दौरान और आराम के दौरान जानकारी की सुरक्षा करता है, यह सुनिश्चित करता है कि डेटा केवल इच्छित प्राप्तकर्ता द्वारा डिक्रिप्ट किया गया है।

🔐 सममित एन्क्रिप्शन एन्क्रिप्शन और डिक्रिप्शन दोनों के लिए एक ही कुंजी का उपयोग करता है, जबकि असममित एन्क्रिप्शन बढ़ी हुई सुरक्षा के लिए अलग-अलग सार्वजनिक और निजी कुंजी का उपयोग करता है।

💬 मैसेजिंग ऐप्स उपयोगकर्ता संचार को सुरक्षित करने के लिए E2E एन्क्रिप्शन लागू करते हैं, जिससे सेवा प्रदाताओं को भी संदेश सामग्री तक पहुंचने से रोका जा सकता है।

🛡️ E2E एन्क्रिप्शन में संभावित कमजोरियों में MITM हमले शामिल हैं, जिन्हें उपयोगकर्ता उंगलियों के निशान के माध्यम से कुंजी प्रामाणिकता की पुष्टि करके रोक सकते हैं।

⚠️ E2E एन्क्रिप्शन सुरक्षा की गलत भावना पैदा कर सकता है, और बैकडोर के लिए कानूनी आवश्यकताएं उपयोगकर्ता डेटा सुरक्षा और गोपनीयता से समझौता कर सकती हैं।

📊 एन्क्रिप्टेड सामग्री के साथ भी, व्यापक सुरक्षा उपायों की आवश्यकता पर बल देते हुए, निगरानी उद्देश्यों के लिए मेटाडेटा विश्लेषण का उपयोग किया जा सकता है।

मेटाडेटा, जिसे अक्सर "डेटा के बारे में डेटा" के रूप में अनुवादित किया जाता है, वह जानकारी है जो अन्य डेटा का वर्णन और व्याख्या करती है। यह एक लेबल या टैग की तरह है जो आपको किसी जानकारी के बारे में अतिरिक्त संदर्भ देता है। इसकी कल्पना किसी पुस्तक के पीछे विस्तृत विवरण के रूप में करें; इसमें कहानी शामिल नहीं है, लेकिन यह आपको शीर्षक, लेखक, शैली, प्रकाशन तिथि और अन्य उपयोगी विवरण बताता है।

यह क्या है?

अम्लीय वर्षा की उत्पत्ति जीवाश्म ईंधन से होती है

वासुदेवन मुकुंठ

अम्लीय वर्षा वह वर्षा है जो अम्लीय होती है। जब सल्फर युक्त जीवाश्म ईंधन का दहन किया जाता है, तो उनके उत्सर्जन में सल्फर डाइऑक्साइड (SO2) शामिल होता है। जब ऐसा दहन उच्च तापमान पर होता है, जैसे कार के इंजन के अंदर, तो दहन उत्पादों में नाइट्रोजन ऑक्साइड और नाइट्रोजन डाइऑक्साइड (सामूहिक रूप से NOx कहा जाता है) भी शामिल होते हैं। SO2 और NOx दोनों भी प्राकृतिक रूप से उत्पन्न होते हैं, जैसे कि जब ज्वालामुखी फटते हैं या जब बिजली वायुमंडल से होकर गुजरती है, लेकिन शहरों में और उसके आसपास, उनका मुख्य स्रोत परिवहन और बिजली उत्पादन के लिए जीवाश्म ईंधन का उपयोग होता है।

एक बार जब SO2 और NOx हवा में बढ़ जाते हैं, तो वे पानी और ऑक्सीजन अणुओं के साथ प्रतिक्रिया करके सल्फ्यूरिक एसिड (H2SO) और नाइट्रिक एसिड (HNO3) का उत्पादन करते हैं, जो दोनों संक्षारक होते हैं। जब ये अणु पानी की बूंदों में घुल जाते हैं और बूंदें अवक्षेपित हो जाती हैं, तो हमारे पास अम्लीय वर्षा, अम्लीय बर्फ और यहां तक कि अम्लीय कोहरा भी होता है।

अम्लीय वर्षा का सामान्य पीएच आसपास होता है 4.2-4.4. जब अम्लीय वर्षा नदियों और झीलों में बहती है, तो यह पानी को कुछ प्रजातियों के लिए अनुपयुक्त बना सकती है; मिट्टी में, यह कुछ जीवाणुओं को नष्ट कर देता है। ये प्रभाव बदले में जंगलों और अन्य बड़े पारिस्थितिक तंत्रों पर प्रतिकूल प्रभाव डाल सकते हैं

तौर तरीकों।

इन प्रभावों को कम करने के लिए, कोयला बिजली संयंत्र फ़्लू-गैस डीसल्फराइजेशन का उपयोग करके अपने वायुमंडलीय उत्सर्जन में एसओ को 90% से अधिक कम करने में सक्षम हैं।

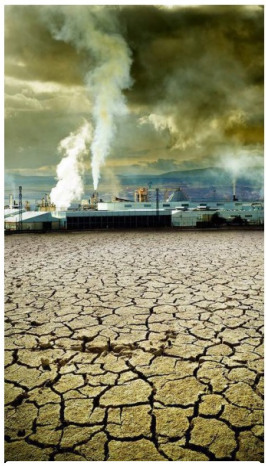

अम्लीय वर्षा में औद्योगिक उत्सर्जन का प्रमुख योगदान है। गेटी इमेजेज/इस्टॉकफोटो

दुनिया भर की कई सरकारें भी इसके लिए मिलकर काम कर रही हैं अम्लीय वर्षा को कम करें; एशिया में एक उदाहरण पूर्वी एशिया में एसिड डिपोजिशन मॉनिटरिंग नेटवर्क (EANET) है।

स्रोत: द हिंदू

सबसे पहले, हंसता हुआ गल भारत में देखा गया

🔎 उत्तरी अमेरिका का एक प्रवासी पक्षी, लाफिंग गल, भारत में पहली बार केरल के कासरगोड जिले के चित्तारी मुहाने पर देखा गया है।

📸 बर्डवॉचर सी. श्रीकांत ने 20 वर्षों के अनुभव के साथ, उस पक्षी को देखा और उसकी तस्वीरें खींची, जो राज्य के तटीय क्षेत्र में हजारों किलोमीटर की यात्रा करता था।

Laughing gull spotted at the Chittari estuary. SPECIAL ARRANGEMENT

🌍 पक्षी विशेषज्ञ और ई-बर्ड एप्लिकेशन द्वारा पुष्टि की गई खोज, भारत में पाई जाने वाली पक्षी प्रजातियों की कुल संख्या को 1,367 तक बढ़ा देती है, जिसमें कासरगोड जिला राज्य की 554 की गिनती में 400 प्रजातियों का योगदान देता है।

🌿 कासरगोड में हंसती हुई गल की उपस्थिति क्षेत्र की समृद्ध जैव विविधता को जोड़ती है, साथ ही मुहाना में अन्य पक्षी प्रजातियों की एक बड़ी संख्या भी है।

t.me/pragyeshIASMENTOR Pragyesh IAS pragyesh.org